भोजपुरी लोककथाओं में नीति

डॉ. आकाश वर्मा
(सह-अध्येत्ता,तृतीय आवृति
जून-2018)
असिस्टेंट प्रोफेसर हिन्दी विभाग
असम विश्वविद्यालय, सिलचर

हम जानते हैं कि कथा लोक-अभिव्यक्ति का प्राचीन माध्यम है। इतनी प्राचीन कि जब पढ़ने लिखने जैसी कोई व्यवस्था नहीं थी, तब से कथाओं के कहने-सुनने की परम्परा है। लोक की इन कथाओं में सामाजिक व्यवहार से लेकर राजनीति, ईश्वर के प्रति श्रद्धाभक्ति, दुख-सुख की संवेदना, मनोरंजन सभी कुछ प्रस्तुत होता आया है। लिखित साहित्य इन्हीं का विकसित रूप माना जा सकता है, जिनमें हम वर्तमान समय में तमाम विमर्शों, विचारधाराओं का अध्ययन भी करते हैं। हालांकि कथाओं के इस लोक स्वरूप में किसी वैचारिक दर्शन, वाद अथवा किसी मत-मतान्तर की खोज करना एकदम गैरजरूरी है, क्योंकि ये कथायें मानव जीवन के प्रवाह एवं प्रभाव के साथ स्वतः उत्पन्न होती आयी हैं। यही जीवन के सीखने-सीखाने और जीने के मानदण्ड का रूपक बन जाती हैं। भोजपुरी लोक कथायें भी अपने सहज एवं स्वाभाविक रूप में लोककंठ में स्थापित होती आयी हैं। कहने का अर्थ यह है कि ये लोक कथायें मानव मन के अनुभूति का मस्तिष्क द्वारा सृजित रूप हैं जो मौखिक परम्परा में एक पीढ़ी से अगली पीढ़ी तक आगे बढ़ती जाती है। हालांकि आज आधुनिकता और तकनीकी से भरे जीवन शैली में इनके लुप्त होने की स्थिति भी आ गयी है। ऐसे में अब वह दौर भी नहीं रहा, जहाँ कोई पुरानी पीढ़ी इन लोककथाओं को सुनाने के लिए व्याकुल दिखे अथवा नई पीढ़ी इनके प्रति सुनने की इच्छा रखे और उत्साह दिखाये। हम जानते हैं नानी-दादी की कहानियों और अनेक अवसरों पर लोगों के बीच में ये कथायें जबानी ही कई शताब्दियों से हमारे बीच रहती आयी हैं। अब इन कथाओं के अवसर नहीं हैं। इनके लिए जगह घट रही है, वह चाहे शहरी जीवन हो या ग्रामीण क्षेत्र।

भोजपुरी लोककथाओं के विषयगत स्वरूप को देखें तो हम इसे निम्मवत तरीके से बाँट सकते हैं[1]-

1. धार्मिक- व्रत, त्योहार, देवता सम्बन्धी कथा
2. युद्ध सम्बन्धी कथायें
3. प्रेम सम्बन्धी कथायें- प्रेमी-प्रेमिका, लौकिक प्रेम
4. सामाजिक चित्रण सम्बन्धी कथायें- जाति परिवार सम्बन्धी, आपसी मधुरता और कटुता सम्बन्धी
5. मनोरंजन कथा- चतुरता, किसी की मूर्खता सम्बन्धित
6. अलौकिक कथायें- देव-दानव, परी, रूप बदलने आदि से सम्बन्धित
7. दुस्साहसिक कथायें- चोर, डाकू से सम्बन्धित
8. उपदेशात्मक कथायें- नीति अथवा दृष्टान्त सम्बन्धित ।

भोजपुरी में जितनी भी लोक कथायें प्राप्त होती हैं, अधिकाशंतः उपदेशात्मक होती हैं[2]। इस उपदेशात्मकता को हम नीति से जुड़ा मान सकते हैं क्योंकि उपदेश एक प्रकार से मनुष्य जीवन के सभी पक्षों से जुड़े नीतिप्रधान तथ्य ही होते हैं । ऊपर के वर्गीकरण भी भले अलग-अलग दिखायी देते हों, किन्तु उन सबमें कहीं न कहीं उपदेशात्मकता का भाव बना रहता है । कुल मिलाकर ये लोक अथवा सामाजिक व्यवसाय के नैतिक स्वरूप को व्यवहृत रूप में बनाये रखने के प्रति सचेत करते हैं । ये एक प्रकार से पौराणिक पात्रों, ऐतिहासिक पात्रों, व्रत-त्योहारों को आधार बनाकर, कल्पना द्वारा सृजित होती हैं, जिनके बीच मनुष्य, देव-दानव, पेड़-पौधे तथा पशु-पक्षी भी स्वाभाविक तरीके से जुड़े रहते हैं । भोजपुरी की इन लोक कथाओं की विशेषता की बात करें तो कृष्णदेव उपाध्याय ने आठ प्रकार बतायें हैं[3]-

1. प्रेम का अभिन्न पुट
2. अश्लील श्रृंगार का अभाव
3. मानव जीवन की मूल प्रवृतियों से निरन्तर साहचर्य
4. समृद्धि और मंगलकामना की भावना
5. संयोग में अंत
6. रहस्य, रोमांच एवं अलौकिकता की मात्रा की प्रधानता
7. उत्सुकता की प्रबल भावना
8. वर्णन की स्वाभाविकता ।

ऊपर हमने भोजपुरी लोक कथाओं के विषयगत स्वरूप तथा विशेषताओं के जिन रूपों को रखा ये सभी मिल करके मानव जीवन को नीतिप्रधान बनाने का कार्य करती हैं। ध्यातव्य है कि नीति से तात्पर्य दिशा निर्देश, व्यवस्थित करने वाले विचार, तथ्य, नियम अथवा मान्यता से होता है। इन कथाओं में राजा, गरीब आदमी, किसान, जातिगत आदमी, पशु-पक्षी, परी, दानव आदि के जीवन से जोड़कर कथायें मिलती हैं। भोजपुरी की इन लोक कथाओं को कहने और सुनने का खास तरीका है। सुनने वालों में एक आदमी अथवा कोई भी, थोड़ी थोड़ी देर पर हाँ (हुँकारी भरना) कहता रहता है। जैसे ही कथा समाप्त होती है वह कहता है- राजा या कथा गईलS बन में , सोचS अपना मन में। अर्थात कथा अब समाप्त होती है अब इसके तथ्य को अपने मन में विचार करें। यह जो मन में विचारने वाली बात है इसी से इन कथाओं के नीतिप्रधान होने का अन्दाजा लगाया जा सकता है। इनके कहने सुनने का उद्देश्य ही रहा है कि सामाजिक, राजनीतिक तथा व्यावहारिक जीवन तथा उसके प्रवाह को नीतिगत बनाये रखा जाये। प्रत्येक कथा में कोई न कोई विशेष बात, कोई उपदेश की बात रहती है, इसलिए कथाकार उसके मनन पर विशेष बल देता है ताकि लोग उसे अपने जीवन में उतार सकें[4]। कथायें अनगिनत हैं इसलिए कुछ ही कथाओं का सहारा लेंगे। मूल कथायें भोजपुरी में हैं, यहाँ उनके हिन्दी रूपान्तर के साथ अपनी बात रखने का प्रयास किया हूँ। निम्नवत उदाहरण से अपनी बात प्रारम्भ करता हूँ-

> बहुत समय पहले की बात है। किसी गाँव में चार मित्र रहते थे- ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। उनकी मित्रता बहुत गहरी थी। एक बार वे चारों धन कमाने के लिए परदेश के लिए निकल पड़े। चलते-चलते एक जंगल के बीच में रात हो गयी, अतः एक पेड़ के नीचे रूकना पड़ा। भयावह जंगल, जंगली जानवरों की आवाज चारो ओर से आने लगी। रात का सन्नाटा माहौल को और ही डरा रहा था। चारों दोस्तों के बीच तय हुआ कि बारी-बारी से तीन लोग सोयेंगे और एक आदमी पहरा देगा। ऐसे रात कट जायेगी। सबसे पहले ब्राह्मण पहरा देने के लिए तैयार हुआ। बाकी लोग सो गये। अचानक जिस पेड़ के नीचे वे सोये थे उसमे एक सोने का फूल खिल आया। ब्राह्मण ने उससे पूछा- तुम कौन हो। फूल ने कहा- मैं सोने का फूल हूँ। तब ब्राह्मण ने कहा कि- तब नीचे गिर जाओ जिससे हम सभी का कल्याण हो जाये और हम लोग वापस अपने घर लौट जायें। फूल ने कहा- गिर तो सकता हूँ किन्तु जहाँ मैं रहूँगा वहाँ लोगों की आपस में नहीं बनेगी। अनिष्ट होने लगेगा, अब कहो तो गिर जाऊँ। ब्राह्मण ने मना कर दिया।

जब क्षत्रिय की बारी आयी तो फूल उसे भी दिखा। क्षत्रिय ने भी पूछा तो उसने कहा कि मैं सोने का फूल हूँ, मैं जहाँ रहूँगा वहाँ अनिष्ट होने लगेगा। क्षत्रिय ने भी मना कर माफी मांग ली। जब वैश्य की बारी आयी तो उसे भी फूल दिखा। वह भी इसी प्रकार की बातचीत के बाद भी मना कर दिया। चौथे पहर में जब शूद्र की बारी आयी, लटका हुआ फूल उसे भी दिखा। उससे भी उसी प्रकार से बातचीत होने लगी। सोने के फूल ने बताया कि- मैं सोने का फूल हूँ। शूद्र ने कहा- तब तुम गिर जाओ कि हम लोग लेके वापस लौट जायें। हम लोग तुमको प्राप्त करने के लिए घरबार छोड़कर निकले हैं। फूल ने उसको भी बताया कि मैं गिर तो जाऊँगा लेकिन में जहाँ रहूँगा वहाँ अनिष्ट होना शुरू हो जायेगा। तब शूद्र ने कहा कि- ऐ भाई तुम गिर जाओ जो होगा सो देखा जायेगा। फूल गिर गया। उसने फूल को उठाकर रख लिया।

सुबह जागने के बाद सबको पता चला। किसी ने कुछ नहीं कहा। आपस में विचार किया गया कि जिसके लिए आये थे वह मिल ही गया, अब इसको बाँट लेते हैं, भोजन करते हैं और वापस लौट चलते हैं। सभी ने आपस में विचार करके तय किया कि दो लोग बाजार से खाना लाने जायेंगे और दो लोग वहीं इन्तजार करेंगे। इसके बाद जो दो लोग खाना लाने जा रहे थे आपस में विचार करने लगे कि ऐसे तो चार लोगों में प्राप्त हुआ धन बाँटना पड़ेगा। लालच में इन दोनों ने तय किया कि पहले हम लोग खाना खा लेते हैं फिर बाकी दोनों के खाने में जहर मिला देंगे। इसी प्रकार जो दो लोग वहाँ बैठे इन्तजार कर रहे थे उन्होंने भी तय किया कि जैसे ही वे लोग आयेंगे उन पर हमला करके उन्हें मार दिया जायेगा। जैसे ही वे लोग आये उन पर हमला करके उन्हें मार दिया गया। फिर सोचे अब तो वापस जाना ही है खाना खा लेते हैं। खाना खाने के साथ ही उनकी भी मृत्यु हो गयी।

हम विचार कर सकते हैं कि यह लोक कथा समाज को कई प्रकार से नीति संदेश दे रही है। धन का लोभ, आपसी दोस्ती में वैमनष्य, संतोष, सहयोग भावना अनेक प्रकार के मानव प्रवृति को दिखाती और उसके सद्गुणों के प्रति सचेत करती है जो समाज एवं लोक के लिए जरूरी तत्त्व है। यह ऐसे नीतिगत मानदण्डों की ओर संकेत करती है, जिससे मानव चरित्र को विकारों से बचाया जा सके। इस प्रकार की कथायें इस बात की प्रमाण हैं कि पंचतंत्र एवं हितोपदेश की तरह इनमें भी सदाचार, राजनीति, लोक-व्यवहार के ज्ञान तथा नीति-शिक्षा ही दी गयी है। लोमड़ी और अंगूर खट्टे, अंधेर नगरी चौपट राजा, किसान के चार बेटे और लकड़ी द्वारा एकता में बल आदि जैसी अनेक कथायें प्रायः हर कहीं पायी जाती हैं। विचार कर सकते हैं कि भोजपुरी की ये लोक कथायें भी मानव जीवन को नीतिप्रधान शिक्षा ही देने

का कार्य करती हैं। इसी प्रकार से एक ऊँट और सियार की छोटी सी लोक कथा को देख सकते हैं। यह कथा दुष्ट के साथ लोग उसी के जैसा व्यवहार करते वाली बात को बताती है तथा मूर्ख दोस्तों से बचने का संकेत करती है-

> एक जंगल में एक ऊँट और एक सियार रहते थे। दोनों में खूब दोस्ती थी। एक दिन सियार ने ऊँट से कहा कि गंगा के उस पार खूब फूट (एक प्रकार का तरबूज) लगा है। चल के हम लोग खाते हैं। सियार ऊँट के पीठ पर बैठ के नदी पार कर गया। दोनों फूट खाने लगे। सियार का पेट छोटा था जल्दी भर गया। उसने ऊँट से कहा कि ऊँट भाई हमारा पेट तो भर गया, चलो चलते हैं। ऊँट का पेट बड़ा वह भरा नहीं, उसने कहा थोड़ा रूको मेरा भी पेट भर जाये तो चलते हैं। सियार तो सियार, थोड़ी देर बाद उसने कहा कि अब तो हमको हुँआस (सियार का चिल्लाना) आ रही है और वह जोर जोर से चिल्लाने लगा। शोर सुनकर इतने में खेत का मालिक आ गया। फुर्तिला सियार चट से भाग गया, ऊँट बेचारा फंस गया। खेत वाले ने उसे खूब पीटा।
>
> इसके बाद वह जैसे तैसे नदी किनारे पहुँचा। सियार उसका इन्तजार कर रहा था कि ऊँट आये तो उसकी पीठ पर बैठ के नदी पार करे। ऊँट अपने साथ हुआ वाकया कैसे भूल सकता था। नदी के बीच में जाकर ऊँट ने सियार से कहा- भई अब मुझे लोटवास (लोटने का मन) लगी है। सियार को जैसे को तैसा मिला। वह पानी में डूबते उतराते हुए बह गया। छोटी सी यह कहानी अन्त में यह भी कहती है कि जो दूसरों के साथ धोखेबाजी करता है या उसका सम्मान नहीं करता, उसके साथ भी लोग ऐसा ही करते हैं।

निश्चित रूप से भोजपुरी की लोक कथायें नीति प्रधान हैं जो लोक जीवन के लिए सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक मानदण्डों को तैयार करती हैं, जिनसे लोकसुधार एवं लोकस्वरूप को बनाये रखा जा सके। इन कथाओं के शीर्षक हालांकि एक प्रकार से सुनिश्चित नहीं होते, किन्तु उनकी कथा के हिसाब से उनके शीर्षक सुने जा सकते हैं। ग्रामपंचायत का फैसला, घोड़ा के सिंघ, चींटी और चिड़िया, चोर और भागवत कथा, टेढ़की खीर, दैत्य और राजकुमार, दो बहनें और राक्षस, धोबी और नेवला, पंछियों की बोली जानने वाली औरत की कथा, बकरी, लोमड़ी और कौवे की कथा आदि-आदि ऐसी सैकड़ों कथायें हैं जिनके शीर्षक कथा को सुनाने वाला अपने हिसाब से रख लेता है। इसलिए इनके ये शीर्षक रूढ़ भी नहीं होते। इन कथाओं में जाति व्यवस्था का आकलन करती हुई कथायें भी हैं। जो बताना चाहतीं है कि लोगों के बीच बढ़ते भेद, असमानता अथवा भाईचारे का भाव इससे नष्ट होता जा रहा

है। ये समानता का भाव लोगों के बीच से लुप्त होने लगे तो किस प्रकार की अवस्था आयेगी, ये कथायें इस व्यवस्था के प्रति जागरूक करती हैं। एक उदाहरण-

> किसी गाँव के रहने वाले एक ब्राह्मण, एक क्षत्रिय और एक नाऊ कहीं जा रहे थे। इन तीनों लोगों को रास्ते में बूट (चना) का खेत मिला। चने की कचरी खूब लहलहा रही थी। ये देखकर तीनों के मन में खाने का लालच आ गया। दोपहर के समय में किसी को न देखकर खेत में आराम से बैठकर चने उखाड़-उखाड़ के खाने लगे। थोड़ी देर में जब खेत का मालिक आया तो तीन लोगों को एक साथ अपनी फसल का नुकसान करता देखकर गुस्सा भी आया और डर भी। तीन लोगों से एक साथ निपट नहीं सकता। चतुराई से इन तीनों को पीटने की योजना बनाया।
>
> पहले उसने सबके बारे में जानकारी लेने की कोशिश की। उसके बाद उसको क्या करना है यह निश्चित किया। बारी बारी से उसने पूछा कि आप कौन हैं महाराज। ब्राह्मण ने कहा कि हम बाबाजी हैं। उसने जबाव दिया। आप खाने का अधिकार तो हर जगह है। गाय और ब्राह्मण को तो खिलाना ही चाहिए। दूसरे ने कहा कि हम राजपूत हैं। उसने कहा आप तो मालिक हैं सरकार आप खूब खाईये। तीसरे ने जबाव दिया हम तो नाऊ हैं। बस वह चतुर आदमी समझ गया क्या करना है। उसने नाऊ से शुरू किया। गाली देते हुए बात शुरू किया- ये तुम्हारे बाप का खेत नहीं हो जो खाये जा रहे हो। किसने कह दिया खाने को। उसके बाद इसने उसे जूतों और लाठी से पीटना शुरू कर दिया। बाकी दोनों लोग अपने जाति के पद और महानता में खुब खुश होते रहे और अपने साथी को पीटते हुए तमाशा भी देखते रहे। उसे जमकर पीटने के बाद वह तुरन्त ठाकुर साहब की ओर मुड़ा और कहा- तुम किससे पूछ के मेरे खेत का चना खा रहे थे क्या ये खेत तुम्हारे बाप का है। यह कहते हुए उनकी भी जमकर धुनाई कर डाली। बाबाजी खुश थे कि मैं तो पूजनीय पण्डित व्यक्ति हूँ, पूरे समाज में मेरी इज्जत है। वह फिर से तमाशा देखते रहे। इन दोनों को पीटने के बाद वह इनकी ओर आते हुए कहा- ये जो तुम कदम-कदम पे दक्षिणा के नाम पर लूटते रहते हो इसका क्या। तुमको तो जजमनिका से मुफ्त में सारा कुछ लेने की आदत पड़ गयी है। आज हम तुम्हारी ये आदत छुड़ा ही देंगे। वह आदमी इनको भी जम के मारा। तीनों फिर किसी तरीके से भाग खड़े हुए।

यह कथा बताती है कि वे तीनों जाति भेद और समाज के भीतर फैली असमानता के भाव के कारण पिट गये। अगर ऐसा नहीं होता तो वे तीनों आराम से उस अकेले आदमी का मुकाबला कर सकते थे। किन्तु ऐसा नहीं हुआ, क्योंकि उनके भीतर के जातिय अहंकार को

उस चतुर आदमी ने जगा दिया था। ये कहानी यह भी कहती है कि इस प्रकार का बँटा हुआ समाज पतनशील ही होगा। हम बेहतर जानते हैं कि आधुनिक भारत में बाहरी ताकतों ने इसका लाभ अधिक उठाया। भोजपुरी की नीति कथाओं में ऐसी अनेक कहानियाँ हैं जो सहज तरीके से सुधारवादी चेतना भरने और लोगों को कर्मठ, जागरूक और चेतन प्रधान बनाने का कार्य करती हैं। हम नीचे लोक को नीति की शिक्षा देती कुछ छोटी-छोटी कहानियों के देख सकते हैं-

एक मूर्ख आदमी था। उसने कभी पढ़ा था कि तालाब बनवाने, कुआँ खोदवाने या रास्ता बनवाने वाले स्वर्ग में जाते हैं। कहने का अर्थ यह लोक मान्यता है कि सामाजिक कल्याण का काम करने वाले स्वर्ग जाते हैं। वह अपनी सारी जमीन-जायदाद बेचकर तालाब बनवाने लगा। लेकिन होता क्या था कि स्वर्ग की कामधेनु गाय आकर उसके हो रहे काम को किसी तरह से नष्ट करके चली जाती थी। ऐसा रोज होने लगा। वह त्रस्त होता और गुस्सा करके रह जाता। एक दिन वह छुप कर देखने लगा कि ऐसा कौन करता है। उसने कामधेनु को आते देखा तो वह झट से उसकी पूँछ पकड़ लेता है। वह गाय उड़ते हुए स्वर्ग की ओर जाने लगती है। वह आदमी भी स्वर्ग पहुँच जाता है। वह खुश हो जाता है। अनुमान के आकार से बड़ी-बड़ी मिठाईयाँ और पकवान देखकर वह और भी खुश होता है। इसके बाद कामधेनु गाय उसे नीचे भी छोड़ देती है। वह आदमी दोस्तों से यह बात बताता है। वे भी कहते हैं कि हमें भी स्वर्ग की बड़ी-बड़ी मिठाई खिलाओ न। वह मूर्ख आदमी मान जाता है।

एक दिन फिर रात को छुपके वे गाय की पूँछ पकड़ लेते हैं। इसके पूँछ पकड़ने के बाद एक एक करके बाकी साथी एक दूसरे के पैर पकड़ लेते हैं। उड़ते हुए अचानक एक से रहा नहीं जाता है वह पूछ ही बैठता है- भाई वहाँ जो मिठाई मिलेगी कितनी बड़ी होगी। वह तो ठहरा मूर्ख। गाय की पूँछ छोड़ के दोनों हाथ फैलाकर कहा- इतना बड़ा। अब तो सभी नीच गिरे और मर गये। यह लोक की नीति कथा यह बताना चाहती है कि समय के हिसाब से विचार करके बात करना चाहिए और मूर्ख दोस्त से समझदार दुश्मन अधिक अच्छा होता है।

कुसंगत से बचने की शिक्षा देने वाली एक कथा इस प्रकार है-

एक बार एक कौए और एक हंस में दोस्ती हो गयी। कुछ दिनों बाद हंस ने कौए से कहा कि तुम अपने घर ले के चलो, घूम आते हैं। कौआ अपने घर ले गया। चारो ओर फैली बदबू और गन्दगी देखकर हंस ने कहा- भाई तुम तो बड़ी गन्दी जगह पर रहते हो यह तो ठीक नहीं है। कौए ने कहा कि ठीक है चलो मैं तुम्हे अपना दूसरा घर दिखाता

हूँ। दूसरी जगह राजा के एक बगीचे में थी। जिस पेड़ में उसका घोसला था उसी के नीचे राजा आराम कर रहा था। कौए की आदत, कौए ने डाल पर बैठते ही राजा के ऊपर बीट कर दिया। राजा अपने बहेलियों को संकेत करता है। बहेलिये तीर चलाने लगते हैं। ऐसे में कौआ तो भाग जाता है क्योंकि उसकी आदत होती है लेकिन हंस को जब तक समझ में आता, तब तक एक तीर उसे लग जाता है। नीचे गिरकर मरते हुए हंस कहता है कि राजा मैंने ऐसा नहीं किया। मैं तो तालाब में सफाई से रहने वाला जीव हूँ। पर तब क्या। कुसंगत में पड़कर उसकी जान व्यर्थ में चली जाती है।

हम ध्यान दे सकते हैं कि ये कथायें केवल इन्सानों ही नहीं पशु-पक्षियों एवं अन्य जन्तुओं के सहारे भी अपना काम करती हैं। ये कथायें एक प्रकार से जीवन को सरलतम रखने का भी प्रयास करती हैं, अर्थात जीवन की जितनी भी जरूरत है केवल उतना ही के लिए सजग रखना चाहती हैं। इसके लिए ये कथायें प्राकृतिक अवयवों के पास भी चली जाती हैं। पुराने समय में जीवन की भयावह जटिलता, लोक या विशेष रूप से ग्राम्य परिवेश में नहीं रही। इसलिए इन लोक कथाओं में जटिल जीवन जैसा कुछ नहीं है। जटिल जीवन हम शहरी संस्कृति, जिनमें सुख-संधाधनों की आपाधापी, धनलोलुपता जैसे प्रवृति काम करती है, में देख सकते हैं। वर्तमान काल के उत्तरआधुनिक, औपनिवेशिक पूँजीवादी समय में मानव के पास अनुभव कम, जटिलता अधिक है। इस जटिलता को अनुभव कहेंगे कि नहीं यह सवाल है क्योंकि एक कार्य, एक अहसास, एक परिस्थिति, एक मानसिकता जैसी एक अवधारणा आज नहीं रही। वर्तमान काल में इस जटिल समय ने शहर से लेकर सुदूर ग्रामीण अंचल तक, सबको ऐसे घेर रखा है जिसमें वह परिवेश भी नष्टप्राय हो गया है जहाँ ये लोक कथायें लोकमानस की प्रवृतियों को सम्हाले रखती थीं। जिनको सुनकर मानव, जीवन उद्योग को आगे बढ़ाता था। मानव की अच्छाईयों-बुराईयों, खेती, व्यापार, ज्ञान, धर्म, मौसम, जीवन के अनुभव आदि लोक की नीतिकथाओं में विषय बने हैं। मानव जीवन इन्हीं से पूरित होता है। ऐसे में इनका सारा जुड़ाव मानव जीवन और उसके व्यवहार से ही है। यह सब नष्ट होता जा रहा है। इस उद्देश्य को संपुष्ट करता एक आखिरी उदाहरण कथा देखें-

एक गाँव में दो भाई रहते थे। दोनों पिता के मरने के बाद अलग-अलग हो गये। समय के साथ बड़ा भाई अमीर हो गया और छोटा गरीब ही रह गया। बड़े भाई के चार बेटे थे, जो अमीरी के साथ बिगड़ गये और किसी की बात नहीं सुनते। छोटे के भी तीन बेटे थे जो अभावों में पल रहे थे। छोटे भाई की हालत इतनी खराब होती गयी कि उनको ठीक से खाना भी नहीं मिलता। ऐसे में वे एक दिन दूसरी जगह पर कमाने के लिए निकल पड़ते हैं। चलते-चलते जब रात हो गयी तो रास्ते में ही एक पेड़ के नीचे

रूक गये। ये चारो लोग घर से जो थोड़ा-बहुत खाने के लिए लाये थे बनाने खाने की व्यवस्था करने लगे। छोटे भाई ने एक बेटे से कहा कि तुम जाकर सूखी लकड़ी ले के आओ। दूसरे बेटे से कहा तुम जाकर कहीं से आग का जुगाड़ करो। इस प्रकार से वे मिलजुल कर अपना काम कर रहे थे। वह पेड़ बहुत पुराना पीपल का पेड़ था, जिस एक जिन रहता था। उसने आग और लकड़ी मंगाने की बात सुनी तो सोचने लगा कहीं ऐसा तो नहीं ये मुझे जलाने की व्यवस्था कर रहे हैं। वह डर गया क्योंकि सभी अपना काम चुपचाप मन से करने में लगे थे। वह नीचे आके छोटे भाई से कहने लगता है- आप सब ऐसा क्यों कर रहे हैं। आप लोग ऐसा मत कीजिए। आप लोगों को जो चाहिए मैं दे दूँगा। छोटा भाई लालची नहीं था लेकिन समझदार था। वह समझ गया उसे क्या करना है। उसने कहा हम ऐसा नहीं करेंगे तो हमे क्या मिलेगा। जिन ने कहा- मैं धन दे सकता हूँ। धन लेकर छोटा भाई और उसके तीनों बेटे वापस लौट गये। वे अपने गाँव में सबसे अमीर बन गये।

ऐसा देखकर बड़ा भाई जलने लगा और उसके पास गया। उसे धमकाने लगा- तुम लोगों के पास तो फूटी कौड़ी नहीं थी। इतना धन कहाँ से आने लगा। जरूर तुम लोग चोरी करते हो। बताओ नहीं तो मैं राजा के सिपाहियों के पास तुम लोगों की शिकायत कर दूँगा। उन्होंने सब सच-सच बता दिया। वे लोग भी लालच में ऐसा ही करने के लिए उस पेड़ के पास गये और जानबूझकर आग जलाने का उपक्रम करने लगे। बड़े भाई ने अपने बेटों को काम सौंपा। वे तो थे बिगड़े हुए कुछ सुने नहीं एक दूसरे को काम कर देने के लिए कहते रहे। यह देखकर जिन नीचे आया। पूछा- यह आग क्यों जलाना चाहते हो। बड़े भाई ने कहा- हम लोग तुमको ही जलाने की व्यवस्था कर रहे हैं। जिन बोला- तुम लोगों की आपस में तो बन नहीं रही है मुझे क्या जलाओगे। पहले एक साथ रहना तो सीख लो। यह कहते हुए वह उन पाँचो को मार डालता है। इसीलिए कहा जाता है कि लालच नहीं करना चाहिए, संतोष करना चाहिए तथा एकता में बहुत बल होता है इसलिए आपस में मिलजुल कर रहना चाहिए।

हम देख सकते हैं कि यह लोक कथा भी हमें नीति की शिक्षा ही दे जाती है। वस्तुतः भोजपुरी की ये नीति कथायें लोक के सही स्वरूप एवं स्वभाव को बनाये रखने के लिए ही निर्मित होती गयी हैं। सही अर्थों में कहे तो मानव को समाजविरोधी और विकृत प्रवृति से दूर रखने के लिए बनी हैं। हम जानते हैं कि भिन्न जीव जन्तु आपस में बात नहीं करते। मनुष्य की किसी और जीव- पशु-पक्षी, पेड़-पौधे से बात नहीं होती। किन्तु इन कथाओं में यह होना उसके अन्तिम उद्देश्य सर्वहित तथा लोक के सत्य को बचाये रखने के लिए होता है। भोजपुरी की इस प्रकार की नीति कथायें लोक जीवन को सही दिशा में बनाये रखने का लोक प्रयास ही

है । प्रत्येक कथा के अन्त में मन में सोचने की बात इसीलिए कही जाती है कि प्रत्येक कथा किसी न किसी लोकनीति अथवा तथ्य से जुड़ी होती है । इसको सुनने के बाद मन में विचार करें और अपने जीवन में लागू करें । इसी प्रकार से यही कथायें लोक के लिए नीतिनियामक का कार्य करती रही हैं ।

सन्दर्भ-

1. भोजपुरी नीतिकथा, संपा.- रसिक बिहारी ओझा निर्भीक, पृष्ठ- 14
2. भोजपुरी लोक साहित्य, कृष्णदेव उपाध्याय, पृष्ठ- 384
3. तदेव, पृष्ठ- 389
4. भोजपुरी लोक साहित्यः सास्कृतिक अध्ययन, श्रीधर मिश्र, पृष्ठ- 375

सहायक ग्रंथ सूची-

1.भोजपुरी लोक संस्कृति- कृष्णदेव उपाध्याय, हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग,
प्रथम संस्करण- 1989
2.भोजपुरी लोकगीत भाग एक –कृष्णदेव उपाध्यय, हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग,
तृतीय संस्करण- 1990
3.भोजपुरी लोकगीत भाग दो –कृष्णदेव उपाध्यय, हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग,
तृतीय संस्करण- 1999
4.भोजपुरी लोकगीत भाग तीन- कृष्णदेव उपाध्याय, भोजपुरी अकादमी पटना,
पहला संस्करण- 1984
5.भोजपुरी संस्कार गीत- हंसकुमार तिवारी तथा राधावल्लभ शर्मा,
बिहार राष्ट्रभाषा परिषद पटना, द्वितीय संस्करण- 2011
6.भोजपुरी लोकगीतों में करूण रस- दुर्गाशंकर प्रसाद सिंह, हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग,
द्वितीय संस्करण- 1965

7.भोजपुरी भाषा और साहित्य, उदयनारायण तिवारी, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद पटना,
तृतीय संस्करण- 2011
8.भोजपुरी के कवि और काव्य- दुर्गाशंकर प्रसाद सिंह, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद पटना,
द्वितीय संस्करण- 2001
9.भोजपुरी प्रकाशन को सइ बरिस- गणेश चौबे, भोजपुरी अकादमी पटना,
पहिला संस्करण- 1983
10.भोजपुरी होरी गीत भाग-1- कर्मेन्दु शिशिर, भोजपुरी अकादमी पटना,
पहिला संस्करण- 1985
11.भोजपुरी होरी गीत भाग-2- कर्मेन्दु शिशिर, भोजपुरी अकादमी पटना,
पहिला संस्करण- 1985
12.भोजपुरी लोक साहित्यः सांस्कृतिक अध्ययन- श्रीधर मिश्र, हिन्दुस्तानी एकेडमी,
प्रथम संस्करण- 1971
13.लोक संस्कृति के आइने में भोजपुरी भाषा- संपादक- वीरेन्द्र सिंह यादव, ओमेगा पब्लिकेशन्स,
दरियागंज दिल्ली, प्रथम संस्करण- 2010
14. भोजपुरी लोक साहित्य, कृष्णदेव उपाध्याय, विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी,
द्वितीय संस्करण- 2008
15. भारत में लोक साहित्य, कृष्णदेव उपाध्याय, साहित्य भवन प्राईवेट लिमिटेड, इलाहाबाद
प्रथम संस्करण- 1998
16. भोजपुरी नीतिकथा, संपादक- रसिक बिहारी ओझा निर्भीक, भोजपुरी अकादमी, पटना,
पहिला संस्करण- 1983
17. भोजपुरी लोकगाथा, सत्यव्रत सिन्हा, हिन्दुस्तानी एकेडेमी, इलाहाबाद,
संस्करण- 1957
18. लोक साहित्य के प्रतिमान, कुन्दन लाल उप्रेती, भारत प्रकाशन मन्दिर अलीगढ़,
तृतीय संस्करण- 2000
19. लोक साहित्य की भूमिका, कृष्णदेव उपाध्याय, साहित्य भवन प्राईवेट लिमिटेड, इलाहाबाद,
संस्करण- 2013
20. भोजपुरी साहित्य का इतिहास, अर्जुन तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी,
प्रथम संस्करण- 2014